सेवा ही जीवन की सफलता : हजारे

प्रसिद्ध समाजसेवी अन्ना हजारे सभा को सम्बोधित करते हुए।

अन्ना हजारे, दादी जानकी, ब्र.कु. रमेश, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. निर्वैर तथा संतोष भारती।

अन्ना हजारे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निर्वैर।

इंजीनियर तो बन गया लेकिन सीमेंट और पत्थर खाने में अपना जीवन बिताता हो तो इंजीनियर बनके क्या किया? इतने विद्यालय चल रहे हैं लेकिन सुसंस्कृत इन्सान का निर्माण नहीं हो रहा है। ये दु:ख की बात है। जो कार्य वो नहीं कर पा रहे हैं यह कार्य घटक है देश, देश का घटक है गाँव और गाँव का घटक है इन्सान। जब तक इन्सान नहीं बदलेगा तब तक गाँव नहीं बदलेगा, गाँव नहीं बदलेगा तो देश नहीं बदलेगा, देश नहीं बदलेगा तो विश्व नहीं बदलेगा और विश्व में शान्ति नहीं आयेगी। तो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से हो रहा है यह बात मुझे बहुत महत्वपूर्ण लगती है। सभी संतों ने कहा है - विश्व शान्ति। विश्व का विद्यालय में जो कार्य हो रहा है इन्सान का निर्माण। सुसंस्कृत आदमी का निर्माण, इससे विश्व में शान्ति आयेगी। कैसा आदमी? जिसका चरित्र शुद्ध है आचार-

परमात्म मिलन के हृदयस्पर्शी अनुभव से अभिभूत अन्ना हजारे। साथ हैं महाराष्ट्र मराठी मीडिया के अध्यक्ष ब्र.कु. करुणा, संतोष भारती, तेलगु फिल्मों के अभिनेता मुकुल।

विचार शुद्ध है। जीवन निष्कलंक है। नव निर्माण में त्याग का बड़ा महत्व जिसका चरित्र बेदाग है जीवन में त्याग है। त्याग करना ही पड़ता है, ये हमारी भूमि कह रही है हजारों साल से, बिना त्याग के कोई भी अच्छा कार्य नहीं होता कुछ न कुछ त्याग करना ही पड़ता है। हम खेती में देखते हैं ना। दानों से भरे भुट्टे नजर आते हैं मक्का, ज्वार, बाजरा। कब नजर आता है जब एक दाने को पहले जमीन में मिटना पड़ता है तब नजर आता है। मैं देख रहा हूँ यहां जो भी है, सारे दाने जमीन में जाने के लिए तैयार है इसलिए ये भुट्टा नजर आ रहा है क्योंकि ये जमीन में जाने वाले दाने हैं। नहीं तो बहुत से दाने सोचते हैं मेरे पास रहने को कोठी है, घूमने को गाड़ी है, इतनी सारी जमीन जायदाद है। मैं लखपति हूँ जमीन में क्यूँ जाऊं सोचते हैं लोग। बंगले में रहने वाले, एयरकंडिशन में रहने वाले सोचते हैं मैं जमीन में क्यों जाऊं। जो दाने यह सोचते हैं वही दाने चक्की में जाते हैं, पिसते हैं और आटा बन जाते हैं। जमीन में नहीं गये तो चक्की में गये आटा बन गया खत्म। हम उनको हर बार पूछते हैं कि आपके घर में दो सौ वर्ष पहले कौन-कौन थे बताइये तो नाम नहीं बताते। चक्की में गये आटा बन गया खत्म। स्वामी विवेकानन्द की जयन्ति क्यों मनाते, बाबा साहेब अम्बेडकर की जयन्ति क्यों मनाते क्योंकि जमीन में गये इसलिए भुट्टे लेकर खड़े हैं। इसलिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जो ज्ञान मिल रहा है वो मुझे बहुत महत्वपूर्ण लगता है। सब लोग दौड़ रहे हैं, दौड़ रहे हैं कितनी भीड़ है। दिल्ली में देखो और शहर में देखो चलने के लिए रास्ता कम पड़ रहा है, सुबह चार बजे उठता है रात्रि दस बजे तक दौड़ता है और थोड़ा, और थोड़ा, और थोड़ा...श्मशान भूमि जाने तक कोई भी रूकता नहीं दौड़ रहा है। जन्म

अन्ना हजारे को शांतिवन परिसर का अवलोकन कराते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय।

में आता कुछ लेकर आता नहीं, जाता कुछ लेकर जाता नहीं। उम्र भर मेरा-मेरा, मेरा-मेरा..। हाथ में देखो कुछ नहीं तो जीता किसलिए है?

आनन्द बाहर नहीं अन्दर है

ये ज्ञान जो परमात्मा शिव बाबा ने हमें दिया वो महत्वपूर्ण है कि हर इन्सान दौड़ रहा है किसलिए आनन्द के लिए। लेकिन कहाँ खोज रहा बाहर, यहां मिलेगा वहां मिलेगा, गाड़ी में मिलेगा, खोज रहा है। एक तरफ आनन्द खोज रहा है दूसरी तरफ एयरकंडिशन कमरे में नींद की गोली लेकर सो रहा है तो कहाँ आनन्द का पता बताया परमात्मा शिव बाबा ने। उन्होंने कहा बच्चों आनन्द बाहर नहीं है वो आनन्द अन्दर से मिलता है। ये मेरा आपसे उपदेश नहीं मेरा भाषण नहीं है, मैं

-शेष पेज 5 पर

आधुनिक तकनीकों से बने भण्डारे का अवलोकन करते हुए अन्ना हजारे। साथ हैं ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. सूर्य, ब्र.कु. भानु, ब्र.कु. राजशेखर तथा अन्य।

भारत - वार्षिक 170 रुपये
तीन वर्ष 500 रुपये
आजीवन 4000 रुपये
विदेश - 2000 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेयबल एट माउण्ट आबू) द्वारा भेजें।

ओम शान्ति मीडिया
सम्पादक : ब्र.कु. गंगाधर
ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन, तलहटी
पोस्ट बॉक्स नं. - 5, आबू रोड (राज.) 307510
Enquiry For Membership, Mob. No. - 09414006096
(M)- 9414154344, E-mail : [illegible]@gmail.com, [illegible]@bkivv.org, website:www.omshantimedia.info

प्रति

RNI NO RAJHIN/2000/721, NEWS PAPER TO POST CONCESSIONAL REGISTRATION NO. RJ/SROHI/9623/12-14, 12TH TO 14 TH, 22 ND TO 24TH POSTED TO SHANTIVAN POST OFFICE
संस्थापक: ब्र.कु. जगदीश, सम्पादक: ब्र.कु. गंगाधर, सहसम्पादक: कमल दीक्षित, प्रकाशक: ब्र.कु. करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज् मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ.) के लिए प्रकाशित एवं सी.पी.प्रिंट पाल्पुराना जयपुर से मुद्रित।